१. हमारा सामाजिक जीवन

१.१ मनुष्य को समाज की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई?

१.२ मनुष्य में समाजशीलता

१.३ हमारा विकास

१.४ समाज से क्या तात्पर्य है ?

पाँचवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक में मानव की उत्क्रांति किस प्रकार हुई, यह तुम सीख चुके हो । हमारा वर्तमान सामाजिक जीवन हजारों वर्षों के विकास (उत्क्रांति) का ही परिणाम है । मनुष्य ने घुमक्कड़ी अवस्था से स्थिर सामाजिक जीवन की ओर प्रगति की है।

आगामी ५० वर्षों के बाद समाज कैसा होगा, इस विषय पर विचार-विमर्श करो ।

१.१ मनुष्य को समाज की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई ?

व्यक्ति तथा समाज के विकास के लिए स्थायी व सुरक्षित सामूहिक जीवन आवश्यक है । घुमक्कड़ी अवस्था में मनुष्य स्थायी व सुरक्षित नहीं था । समूह में रहने से सुरक्षा मिलेगी, इस बात का बोध होने से मनुष्य संगठित रूप में जीवनयापन करने लगा । समाज के निर्माण के पीछे यह भी एक प्रमुख प्रेरणा थी । समाज में प्रतिदिन के व्यवहार को सुचारु रूप से चलाने के लिए मनुष्य को नियमों की आवश्यकता अनुभव हुई । फलस्वरूप रूढ़ियाँ, परंपराएँ, नैतिक मूल्य, नियम और कानून बनाए गए । इस कारण मनुष्य का सामाजिक जीवन और अधिक संगठित और स्थायी हुआ ।

१.२ मनुष्य में समाजशीलता

मनुष्य स्वभावतः समाजप्रिय है । हम सभी को एक दूसरे के साथ, एक-दूसरे के पारस्परिक सहयोग से लोगों के बीच रहना अच्छा लगता है । सभी के साथ रहना जिस प्रकार आनंद की बात है वैसे ही वह हमारी आवश्यकता भी है।

हमारी अनेक प्रकार की आवश्यकताएँ होती हैं। भोजन, वस्त्र, निवास आदि हमारी शारीरिक आवश्यकताएँ हैं । उनके पूर्ण होने पर मनुष्य को स्थिरता मिलती है । परंतु मनुष्य के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं होता क्योंकि हमारी कुछ भावनात्मक और मानसिक आवश्यकताएँ भी होती हैं । जैसे-स्वयं को सुरक्षित अनुभव करना, यह हमारी भावनात्मक आवश्यकता है । आनंदित होने पर हमें वह आनंद किसी को बताने की इच्छा होती है । दुख में लगता है कि कोई हमारे साथ हो । हमारे परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों और मित्रों के सानिध्य में रहना हमें अच्छा लगता है । इसके द्वारा ही हमारी सामाजिकता प्रकट होती है ।

बोलो और लिखो ।

चित्रकला की प्रतियोगिता में तुम्हें प्रथम पुरस्कार मिला है । उसे अपने पास रखोगे कि मित्रों-सहेलियों को दिखाओगे ? तुम्हारे पुरस्कार के प्रति उनसे तुम किस प्रकार की प्रतिक्रिया की अपेक्षा करते हो? उनकी प्रतिक्रिया पाकर तुम्हें कैसा लगा?

- सराहना करने पर बहुत अच्छा लगा ।
- अच्छे चित्र बनाने की प्रेरणा मिली ।
- तुम्हें और क्या लगा? इस बारे में लिखो ।

तुम जानते हो कि भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य हमारी मूलभूत आवश्यकताएँ हैं । समाज में लोगों के परिश्रम एवं कौशल द्‌वारा वस्तुएँ निर्मित होती हैं । शिक्षा और स्वास्थ्यविषयक सेवा-सुविधाओं के कारण हम सम्मानपूर्वक जीवन जीते हैं । ये सारी बातें हमें समाज में उपलब्ध होती हैं । विभिन्न उद्‌योगों, व्यवसायों से हमारी आवश्यकताएँ पूर्ण होती हैं । जैसे-हमें पढ़ाई हेतु पुस्तकों की आवश्यकता होती है । पुस्तकों के लिए कागज की आवश्यकता होती है । इससे कागज निर्माण उद्‌योग, छापाखाना और पुस्तक सिलना, जिल्द व्यवसाय आदि उद्‌योगों का विकास होता है । अनेक लोगों का इसमें योगदान रहता है । समाज के विभिन्न व्यवसायों द्‌वारा हमारी आवश्यकताएँ पूर्ण होती हैं । इसके द्‌वारा हमारी क्षमताओं और कौशलों का विकास होता है । समाज में मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है । समाज की सुरक्षा, सराहना, प्रशंसा, सहयोग आदि घटकों के लिए हम सभी एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं । इसीलिए हमारा सामाजिक जीवन परस्परावंलबी होता है।

करके देखो

सुबह उठने के बाद हमें किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, उनकी एक सूची तैयार करो । उनमें से कम-से-कम पाँच वस्तुओं को बनाने और तुम तक पहुँचाने की प्रक्रिया में किस-किस का सहयोग होता है; वह ढूँढ़ो ।

१.३ हमारा विकास

प्रत्येक मनुष्य में स्वभावत: कुछ गुण और क्षमताएँ होती हैं । वे सुप्त अवस्था में होती हैं । समाज के कारण ही मनुष्य के सुप्त गुणों का विकास होता है । एक-दूसरे से बोलने के लिए हम भाषा का सहारा लेते हैं परंतु वह भाषा हमें जन्म से ज्ञात नहीं होती । उस भाषा को हम धीरे-धीरे सीखते हैं । सबसे पहले हम वह भाषा सीखते हैं जो हमारे परिवार में बोली जाती है । यदि हमारे पड़ोसी भिन्न भाषा बोलनेवाले लोग हैं तो उस भाषा से भी हमारा परिचय होता है । विद्‌यालय में भी विभिन्न भाषाएँ सीखने का अवसर मिलता है ।

हमारे पास स्वतंत्र विचार करने की भी क्षमता होती है । जैसे-विद्‌यालय में सभी विद्‌यार्थियों को एक ही विषय पर निबंध लिखने के लिए दिया जाता है परंतु कोई भी दो निबंध एक जैसे क्यों नहीं होते? क्योंकि सबके विचार अलग-अलग होते हैं । समाज के कारण ही हमारी भावनात्मक क्षमता और विचार शक्ति में वृद्‌धि होती है। समाज के कारण हमें अपने विचार और भावनाएँ अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है ।

समाज के फलस्वरूप मनुष्य के कलात्मक गुणों का विकास भी होता है । गायक, चित्रकार, वैज्ञानिक, साहसी-वीर, सामाजिक कार्य करनेवाले विभिन्न व्यक्तियों के गुणों का विकास समाज के प्रोत्साहन व समर्थन से ही संभव होता है। उन्हें प्राप्त होनेवाला यह प्रोत्साहन भी उतना ही महत्त्वपूर्ण होता है ।

१.४ समाज किसे कहते हैं ?

समाज में स्त्री-पुरुष, वयस्क, वृद्‌ध, छोटे लड़के-लड़कियाँ सभी का समावेश होता है । हमारे परिवार हमारे समाज के घटक होते हैं । समाज में विभिन्न गुट, संस्थाएँ, संगठन होते हैं । लोगों में पारस्परिक संबंध- व्यवहार, उनके बीच के आदान-प्रदान आदि का समावेश समाज में ही होता है । मनुष्यों के जत्थे या भीड़ को समाज नहीं कहते बल्कि जब किसी समान उद्‌देश्य को पूर्ण करने के लिए लोग एकत्रित आते हैं, तब उनका समाज बनता है ।

भोजन, वस्त्र, आवास और सुरक्षा जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए हमें समाज में स्थायी शासन व्यवस्था निर्माण करनी पड़ती है । ऐसी व्यवस्था के बिना समाज के दैनिक व्यवहार पूर्ण नहीं हो सकते । समाज का अस्तित्व बने रहने के लिए व्यवस्था का होना आवश्यक है । जैसे- अनाज की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए खेती करना आवश्यक है । खेती से संबंधित सभी कार्यों को पूर्ण करने के लिए विभिन्न संस्थाओं का निर्माण करना पड़ता है । खेती के औजार बनाने के कारखाने; किसानों को ऋण देने के लिए बैंक, उत्पादित माल बेचने के लिए उपज मंडी जैसी व्यापक व्यवस्था का निर्माण करना पड़ता है । ऐसी विभिन्न व्यवस्थाओं द्वारा समाज को स्थिरता प्राप्त होती है ।

अगले पाठ में हम भारत की सामाजिक विविधता का परिचय प्राप्त करेंगे ।

क्या तुम जानते हो ?

जन्म से सभी मनुष्य एक समान हैं । मनुष्य के रूप में सभी का स्थान समान है । भारतीय संविधान के अनुसार सभी लोग कानून के सम्मुख समान हैं । संविधान द्वारा हमें समान अवसर प्राप्ति की गारंटी दी गई है । शिक्षा, क्षमता व कौशलों का उपयोग कर हम अपनी उन्नति कर सकते हैं ।

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखो ।

(१) समाज में दैनिक व्यवहार को सुचारु रूप से चलाने के लिए मनुष्य को ..... की आवश्यकता अनुभव हुई ।

(२) मनुष्य के कलात्मक गुणों का विकास ..... में ही होता है ।

(३) हमारी कुछ भावनात्मक और .....आवश्यकताएँ होती हैं ।

२. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो ।

(१) हमारी मूलभूत आवश्यकताएँ कौन-सी हैं?

(२) हमें किसके सान्निध्य में रहना अच्छा लगता है?

(३) समाज के कारण हमें कौन-से अवसर प्राप्त होते हैं?

३. तुम्हें क्या लगता है ? दो से तीन वाक्यों में उत्तर लिखो ।

(१) समाज का निर्माण किस प्रकार होता है ?

(२) समाज में स्थायी स्वरूप की व्यवस्था क्यों निर्मित करनी पड़ती है ?

(३) मनुष्य का सामाजिक जीवन अधिक संगठित व स्थायी किस कारण बनता है?

(४) समाज व्यवस्था अस्तित्व में न होती तो कौन-सी समस्याएँ निर्माण हो सकती थीं?

४. निम्न प्रसंगों में क्या करोगे?

(१) तुम्हारे मित्र/सहेली की शालेय सामग्री घर पर रह गई है ।

(२) रास्ते पर कोई दिव्यांग व्यक्ति मिले ।

उपक्रम :

(१) खेती के औजार निर्मित करनेवाले किसी कारीगर से मिलो । उस कार्य में उसे किस-किसकी सहायता प्राप्त होती है, उसकी सूची बनाओ ।

(२) निकट के किसी बैंक में जाओ । वह बैंक किन-किन कार्यों के लिए ऋण देता है; उसकी जानकारी प्राप्त करो ।

(३) मानव की मूलभूत व नई आवश्यकताओं की सूची तैयार करो ।

* * *